45

राज्य में सम्बन्ध

(18:1-35)

मत्ती 18 अध्याय में मत्ती के शिक्षा वाले पांच भागों पर चौथा भाग है, जिनमें प्रत्येक के बाद ''जब यीशु [ये बातें] कह चुका'' शब्दों के साथ समाप्त किया जाता है (7:28; 11:1; 13:53; 19:1; 26:1)। इस चौथे ब्लाक में वह शिक्षा है, जो प्रभु ने यहूदिया और यरूशलेम को अपनी यात्रा आरम्भ करने से थोड़ा पहले, कफरनहूम में दी थी (19:1; 21:1)।

यहां पर यीशु की शिक्षा का केन्द्र विश्वास के नये समाज अर्थात उस कलीसिया में जिसे उस ने स्थापित करना था सम्बन्धों पर था (16:18)। एक से दूसरे विषय में जाते हुए यह अध्याय पांच भागों में बंट जाता है: (1) राज्य में बड़ा होना (18:1-4), (2) ठोकर लगने वाले पत्थर बनने के विरुद्ध चेतावनियां (18:5-9), (3) खोई हुई भेड़ का दृष्टांत (18:10-14), (4) झगड़ों को निपटाना (18:15-20) और (5) क्षमा न करने वाले सेवक का दृष्टांत (18:21-35)।

राज्य में बड़ा होना: दीनता[1] (18:1-4)

[1]उस घड़ी चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, ''स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?'' [2]इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया, [3]और कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। [4]जो कोई अपने आपको इस बात के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।''

आयत 1. उस घड़ी वाक्यांश, जिससे इस अध्याय का आरम्भ होता है, कफरनहूम की पिछली घटनाओं के साथ निकट सम्बन्ध का संकेत देता है (17:24-27)। सुसमाचार का मरकुस का वृत्तांत इस बात की पुष्टि करता है कि यह चर्चा वहीं पर हुई थी (मरकुस 9:33)। जैसा कि वे आम तौर पर करते थे, **चेले यीशु के पास आकर पहुंचने लगे।**[2]

मरकुस के समानांतर विवरण से तुलना करने पर मत्ती का विवरण संक्षिप्त लगता है। यीशु के साथ ''गलील में होकर'' जाते हुए चेलों में स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा होने पर चर्चा जारी रहती है (मरकुस 9:30)। कफरनहूम में पहुंचने के बाद वे एक घर में गए जहां उन्हें रुकना था, सम्भवतया यह पतरस का घर था। फिर यीशु ने रास्ते में चेलों की बातचीत के बारे में पूछा कि वे क्या बातें कर रहे थे (मरकुस 9:33)। बिना शक उसे मालूम था कि वे किस बात पर चर्चा कर रहे थे, परन्तु फिर भी उस ने पूछ लिया कि वे क्या बातें कर रहे थे। शायद ऐसा उस ने उन्हें जो कहा गया था उस पर ध्यान से विचार करने के लिए किया। बातचीत के दौरान उन्होंने पूछा,

''स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?''

स्पष्टतया चेलों के मन में अभी भी परमेश्वर के राज्य की गलत अवधारणा थी। इस चर्चा से थोड़ी देर पहले ही यीशु ने अपने दुख उठाने की भविष्यवाणी दूसरी बार विस्तार से की थी (17:22, 23)। उस ने अपने आपको दुखी सेवक के रूप में दिखाया था, पर चेलों के मन में अभी भी पदवी और बड़े होने की सांसारिक इच्छाएं भरी हुई थीं। मरकुस 9:35 बताता है कि यीशु ने चेलों से कहा, ''यदि कोई बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और सबका सेवक बने।''

आयत 2. यीशु आम तौर पर नई शिक्षाएं देने के लिए अवसरों के रूप में चेलों के ही प्रश्नों का इस्तेमाल करता था (13:10, 36; 18:21; 24:3)। यहां पर उस ने उस सच्चाई को समझाने के लिए जिसे वह उनके साथ जोड़ना चाहता था, गोद में एक **बालक** को लिया। ''बालक'' के लिए यूनानी भाषा के शब्द (*paidion*) का अर्थ बहुत छोटा बच्चा या नवजात हो सकता है। यह बालक एक डेढ़ साल का बच्चा हो सकता है, क्योंकि यीशु ने उस बालक को अपने पास **बुलाया**। माता-पिता की किसी प्रकार की सहायता का कोई उल्लेख नहीं है। कइयों ने सुझाव दिया है कि यदि वे पतरस के घर में थे तो वह बच्चा पतरस के परिवार में से ही था।

जब वह बालक यीशु के पास आ गया तो उस ने उसे चेलों के **बीच में खड़ा किया**। इन बड़े-बड़े लोगों के बीच वह बालक महत्वहीन लगा होगा। प्राचीन जगत में बच्चों को व्यस्कों की तरह आदर नहीं दिया जाता था। बेटों को बेटियों से अधिक प्राथमिकता दी जाती थी क्योंकि उन्होंने अंत में परिश्रम करने वाले और सिपाही बनना होता था। यूनानी-रोमी समाज में अस्वस्थ लड़कों के साथ कई बार लड़कियों को छोड़ दिया जाता था। लड़कियों का गर्भपात करवा दिया जाता था। यहूदी लोगों में बच्चों के प्रति उच्च विचार पाया जाता था क्योंकि वे बच्चों को परमेश्वर की अद्‌भुत सृष्टि का भाग मानते थे। इसके बावजूद ऐसे छोटे बच्चों को बड़ों से निकम्मे ही माना जाता था (19:13, 14)। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए पता चलता है कि प्रभु के काम सचमुच में कितने क्रांतिकारी थे। सिखाने वालों के लिए अपने छात्रों के लिए नैतिक शिक्षा और वीरता के उदाहरणों की नकल करने के लिए ऐसे उदाहरण देना आम बात थी। इसके विपरीत यीशु ने उनके बीच एक बालक को खड़ा कर दिया।[3]

आयत 3. स्वर्ग के राज्य में बड़ा होने के उनके प्रश्न का उत्तर यीशु ने नमूने के रूप में इस बालक का इस्तेमाल करके दिया। उस ने समझाया था, **''मैं तुम से सच कहता हूं, जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।''** चेले यह समझकर कि उन्हें राज्य में प्रमुख भूमिकाएं दी जाएंगी, इसमें पदवियों के लिए झगड़ रहे थे। यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि वे अपने घमण्ड और स्वार्थ में बने रहें तो किसी तरीके से इसमें प्रवेश नहीं कर पाएंगे। ''न'' दोहरे नकारात्मक पर ज़ोर देने वाले शब्द (*ou mē*) का अनुवाद है। इसका अनुवाद ''बिल्कुल नहीं'' या ''कभी नहीं'' हो सकता है (NIV; NRSV)।

चेलों के लिए ''फिरना'' (*strephō*) अर्थात ''बदलाव'' आना आवश्यक था। लूका ने ऐसे ही शब्द (*epistrepho*) का इस्तेमाल किया है जिसका अनुवाद पतरस के दूसरे प्रवचन की बात बताते हुए ''मन फिराओ'' और ''फेरकर'' हुआ है (प्रेरितों 3:19, 26)। चेलों के लिए अपनी फुली हुई अकड़ से मुड़कर अपने आप को छोटे बच्चों की तरह दीन बनाना आवश्यक था। बच्चों जैसे गुण उन सब मन फिराने वालों के लिए आवश्यक हो जाते हैं। बच्चों में पूरा विश्वास होता

है, घमण्ड नहीं होता और आसानी से क्षमा करने वाली प्रवृति होती है।[4] उस के लिए जो स्वर्ग में प्रवेश करने का इच्छुक हो, ये गुण होने आवश्यक हैं।

''स्वर्ग का राज्य'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल मत्ती की पुस्तक में बत्तीस बार हुआ है और पवित्र शास्त्र में और कहीं नहीं हुई। यह मरकुस 9:1 वाले ''परमेश्वर का राज्य'' के समान है। यही वह राज्य था, जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी (दानिय्येल 2:44)। यीशु के जैतून पहाड़ पर से स्वर्ग में ऊपर उठाए जाने से पहले, प्रेरितों ने उससे पूछा था, ''हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा?'' (प्रेरितों 1:6)। वे राज्य की वास्तविक प्रवृति पर अभी भी उलझन में थे। यीशु ने उन्हें बताया:

> उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया में, और सामरिया और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों 1:7, 8)।

यह भविष्यवाणी पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हो गई थी (प्रेरितों 2)। उस दिन प्रेरितों को पवित्र आत्मा और सामर्थ मिली थी और परमेश्वर का राज्य संसार में आ गया था (प्रेरितों 2:4, 32-36)। लोगों ने विश्वास, मन फिराव और बपतिस्मा के द्वारा राज्य में प्रवेश किया था (प्रेरितों 2:37, 38)। यह यीशु के उस निर्देश को पूरा करने के लिए था कि व्यक्ति के लिए ''परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से पहले'' ''नये सिरे से जन्म लेना'' अर्थात ''जल और आत्मा से जन्म लेना'' आवश्यक है (यूहन्ना 3:3, 5)।

आयत 4. यह संक्षिप्त पाठ आयत 1 में चेलों के प्रश्न के यीशु के उत्तर के साथ समाप्त होता है: **''जो कोई अपने आपको इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।''** परमेश्वर की नजर में बड़ा होने के लिए अपने आपको दीन करना और दूसरों की सेवा के लिए तैयार करना आवश्यक है। यीशु ने कहा कि वह भी ''इसलिए नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुडौती के लिए अपने प्राण दे'' (20:28)। फसह के भोजन के समय उनके पांव धोकर उस ने प्रेरितों को सेवा करने का नमूना दिया (यूहन्ना 13:5-16)। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे ने टिप्पणी की है, ''दीन लोग सबसे बड़े होंगे, क्योंकि वे सबसे निस्वार्थ ढंग से रहेंगे और अधिकतर यीशु के जैसे।''[5] किसी ने कहा है, ''जो ऊपर जाने की इच्छा करता है उसके लिए पहले नीचे अर्थात अपने घुटनों के ऊपर होना आवश्यक है।''

ठोकर लगने के पत्थर बनने के विरुद्ध चेतावनी: जिम्मेदारी (18:5-9)

[5]''और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता वह मुझे ग्रहण करता है। [6]पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उस के लिए भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे

समुद्र में डुबाया जाता।

[7]''ठोकरों के कारण संसार पर हाय! ठोकरों का लगना तो अवश्य है, पर हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा ठोकर लगती है।

[8]''यदि तेरा हाथ या तेरा पांव मुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर फेंक दे; टुंडा या लंगडा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में अनन्त आग में डाला जाए। [9]यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकाल कर फेंक दे; काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इस से भला है कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए।''

फिर यीशु विश्वासियों के व्यवहार की ओर मुड़ गया। इन विश्वासियों को ग्रहण किया जाना आवश्यक है (18:5) और ठोकर खाने वाले बनना नहीं (18:6)। जो दूसरों के लिए ठोकर का कारण बनते हैं, उनका न्याय बड़ी कठोरता से होगा (18:7)। इसके अलावा यह चौकसी रखनी आवश्यक है कि कहीं कोई किसी के लिए ठोकर न बन जाए (18:8, 9)।

आयत 5. एक ऐसे बालक को उस बच्चे की बात है जिसे यीशु ने गोद में लिया था (मरकुस 9:36)। वह किसी विश्वासी का स्वागत करने के नियम को समझाने के लिए इस बालक का स्वागत कर रहा था। आम तौर पर **ग्रहण करता है** (*dechomai*) शब्द का अर्थ होता है ''जान-बूझकर किसी चीज़ को या व्यक्ति को आसानी से लेना।'' मत्ती में पहले प्रेरितों के मिशन कार्य के समर्थन में आतिथ्य दिखाने के लिए अधिक विशेष रूप से इस शब्द का इस्तेमाल किया गया था (10:40-42 पर टिप्पणियां देखें)। इसके साथ के मरकुस के विवरण में इसी अर्थ का सुझाव मिल सकता है, क्योंकि इसमें भी दूसरों के प्रेरितों को ''एक कटोरा पानी इसलिए'' पिलाने का उल्लेख है [कि वे] ''मसीह के'' चेले हैं (मरकुस 9:41)। *Dechomai* अन्य आयतों में भी प्रचारकों का आतिथ्य का संकेत देता है (2 कुरिन्थियों 7:15; गलातियों 4:14; कुलुस्सियों 4:10; देखें प्रेरितों 21:17)।

यीशु के कहने का अर्थ था कि कम सामाजिक हैसियत वालों सहित परमेश्वर के बालक के साथ लोगों के व्यवहार का ढंग ही यीशु के साथ किया जाने वाला व्यवहार होना था (देखें 25:40, 45)। यह देखने के लिए कि संसार आम तौर पर बड़े और प्रसिद्ध लोगों की सेवा करता है अधिक ज़ोर लगाने की आवश्यकता नहीं होगी। यीशु ने कहा कि उसके चेले निर्बल और अज्ञात लोगों की सेवा करें।[6]

आयत 6. यीशु ने **इन छोटों में से जो विश्वास करते हैं एक को ठोकर** खिलाने के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए उदाहरण के रूप में बालक का ही इस्तेमाल किया। एक बार फिर यह परमेश्वर के आत्मिक संतान में से एक की बात पर है। अनुवादित क्रिया शब्द **ठोकर खिलाए** (*skandalizō*) मत्ती में नये नियम की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक बार मिलता है।[7] इस अध्याय में यह आयतों 6, 8, और 9 में मिलता है जहां इसके किसी दूसरे को पाप करने के लिए प्रभावित करने की बात है।

दूसरों के लिए ठोकर का कारण बनने वाले व्यक्ति के लिए यीशु ने कहा **भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबोया जाता।**

उसके कहने का अर्थ था कि किसी विश्वासी के लिए ठोकर का कारण बनकर परमेश्वर के न्याय का सामना करने से कहीं बेहतर भयानक मृत्यु मर जाना है। समुद्र में डुबोया जाना उस व्यक्ति के लिए जो दूसरों से पाप करवाता है अपेक्षाकृत बेहतर मृत्यु है (लूका 17:2)।[8]

प्राचीन जगत में चाहे कष्टदायक मृत्यु का सबसे आम ढंग नहीं था पर कई बार कुछ जान-बूझकर लोग डूब जाते थे।[9] यीशु के रूपक में बड़ी चक्की का पाट गले में लटकाकर डुबोए जाने वाले व्यक्ति को जीने की कोई आशा नहीं थी। उस का शरीर तले तक डूब जाना था, जहां से इसका बाहर निकल आना असम्भव था। उस मामले में लाश को सही ढंग से दफनाया जाना नहीं मिलना था। चेले अभी कफरनहूम में ही थे (मरकुस 9:33), इस कारण एक दम से ध्यान में आने वाला समुद्र गलील की झील ही था।

NASB में जहां ''चक्की का भारी पाट'' है, मूल यूनानी धर्मशास्त्र में ''गदहे [का] चक्की का पाट'' (*mulos onikos*) है। यह आम चक्की के पाट का ऊपरी पत्थर था जिसे गदहे या बैल के साथ एक डंडे से जोड़ा जाता था।[10] जानवर अनाज को पीसने के लिए नीचे वाले पाट के उलट ऊपर के पाट को घुमाते हुए एक चक्र में चलता रहता। यह बड़ी चक्की का पाट घरों में स्त्रियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली बहुत चक्कियों से अलग समझा जाना चाहिए (24:41)। आज कफरनहूम के प्राचीन स्थल पर विभिन्न आकार के चक्कियों के पाट देखे जा सकते हैं।

आयत 7. यीशु ने आगे कहा, ''**ठोकरों के कारण संसार पर हाय**!'' ''हाय'' शब्द से चाहे सही क्रोध की झलक मिलती है पर इस अभिव्यक्ति के प्रभु के इस्तेमाल में गहरा दुख और तरस मिला हुआ है (11:21 पर टिप्पणियां देखें)। यहां पर उस की बात दिखने में स्वाभाविक लगती है। यह इस तथ्य का भेद खोल देती है कि पाप से भ्रष्ट होने के कारण यह संसार गिरा हुआ है। यीशु के पीछे चलने वालों को निश्चित रूप में पता चलेगा कि **ठोकरों के कारण** बहुत से हैं, जिन्हें उन्हें रोकना है। परन्तु वे किसी दूसरे के रास्ते में ठोकर लगने के पत्थर फैंकने के दोषी न हों (रोमियों 14:13; 1 कुरिन्थियों 8:9-13; देखें लैव्यव्यवस्था 19:14)।

फिर यीशु ने कहा, ''**हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा ठोकर लगती है**।'' भाषा सम्भवतया उन सब लोगों के आम दोष की ओर ध्यान दिलाती है, जो दूसरों से पाप करवाते हैं। यह चौंकाने वाले ढंग से 26:24 में यहूदा के पकड़वाने पर प्रभु की डांट से मेल खाती है: ''उस मनुष्य के लिए शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है! यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता'' (26:24; NIV)।

आयतें 8, 9. यीशु ने बुराई के पूरी तरह से प्यार और छोड़ देने की पुकार के लिए अतिश्योक्ति का इस्तेमाल किया। उस ने कहा कि यदि **हाथ, पांव, या आंख** किसी से पाप करवाती है तो इसे निकालकर फैंक देना चाहिए। ये आयतें पहाड़ी उपदेश में पहले दी गई शिक्षा को दोहराती हैं, चाहे इस संदर्भ में ''पांव'' जोड़ा गया है (5:29, 30 पर टिप्पणियां देखें)।

यहूदियों के लिए अपने अंगछेद करना घृणित माना जाता था, जिससे यीशु की अतिश्योक्ति भरी बातें और भी ज़ोरदार हो जाती हैं। धार्मिक श्रद्धा के कुछ चरम रूपों को मानने वालों में अपने अंगछेद पर विश्वास किया जाता था और ऐसा किया भी जाता था (1 राजाओं 18:25-29)। कुछ धर्मों में किया जाने वाला कशाघात इस बात का उदाहरण है। और लोग यह मानते हुए कि ऐसा

करने से वे शरीर को पाप करने से रोक सकते हैं, अपने आपको चाकुओं से नोचते या काटते हैं। कुछ मसीही और कसदियों में भी ऐसी ही बातें पाई जाती थी (देखें कुलुस्सियों 2:23)। तौभी यीशु ने एक और जगह पर स्पष्ट कर दिया कि आत्मिक शुद्धता के वास्तविक मुद्दे में भीतरी मनुष्य रहता है (15:18, 19; देखें 2 कुरिन्थियों 10:5)।

प्रभु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि शरीर के सभी अंग सलामत रहने पर **अनन्त आग में डाला** जाने से अंगछेद होकर स्वर्ग में प्रवेश करना कहीं बेहतर होगा। ''अनन्त'' के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*aiōnios*) दुष्टों के दण्ड और धर्मियों के प्रतिफल के समय का संकेत देता है (25:46)। दोनों ही मामलों में इस शब्द की परिभाषा एक ही होगी।

आयत 8 में ''अनन्त आग'' आयत 9 में **नरक की आग** का समानांतर है। ''नरक'' के लिए यूनानी शब्द (*gehenna*) है जिसे यरूशलेम के दक्षिण में हिनोम की तराई से लिया गया था। पुराने नियम में इस स्थान को सबसे घृणित विकृतियों के लिए जाना जाता था और बाद में यह कूड़े का ढेर बन गया, जहां आग निरन्तर जलती रहती थी (5:22 पर टिप्पणियां देखें)। यीशु ने नरक को ''न बुझने वाली आग'' के रूप में वर्णित किया, ''जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती'' (मरकुस 9:43, 48)।

खोई हुई भेड़ का दृष्टांतः व्यक्तिगत सम्भाल (18:10-14)

[10]''देखो, तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। [11][क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।]

[12]''तुम क्या सोचते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक जाए, तो क्या निन्यानवे को छोड़ कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा? [13]और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूं कि वह उन निन्यानवे भेड़ों के लिए जो भटकी नहीं थी, इतना आनन्द नहीं करेगा जितना कि इस भेड़ के लिए करेगा। [14]ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो।''

विनम्रता के महत्व (18:1-4) और दूसरों को ठोकर न दिलाने (18:5-9) पर ज़ोर देने के बाद यीशु ने अपने चेलों को परमेश्वर की नज़र में हर विश्वासी का महत्व बताया। ऐसा उस ने एक भेड़ वाला छोटा दृष्टांत देकर किया (18:10-14)।

आयत 10. वह बालक जिसने सबक देने के रूप में काम किया था (18:2, 4, 5) सम्भवतया अभी भी यीशु के सिखाना जारी रखते हुए उनके बीच में था। आयत 6 की तरह **इन छोटों** शब्द सम्भवतया सभी चेलों पर लागू होता है। यीशु के किसी भी चेले को कभी तुच्छ नहीं समझा जाना चाहिए (रोमियों 12:16; फिलिप्पियों 2:3, 4)। **तुच्छ** के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*kataphroneō*) का अनुवाद ''नीच समझना'' या ''हल्के से लेना'' भी हो सकता है। इसका अर्थ किसी दूसरे व्यक्ति को अपने से घटिया समझना और उसके साथ अपमानजनक ढंग से व्यवहार करना है।

यीशु ने आगे कहा, ''**स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं।**'' इस बात से यह विचार बन गया है कि मसीही लोगों के संरक्षक स्वर्गदूत हैं (देखें NEB) इसमें या तो प्रत्येक मसीही पर निगरानी रखने वाला व्यक्तिगत स्वर्गदूत है या कई मसीही लोगों की निगरानी रखने वाला एक स्वर्गदूत। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने स्वर्गदूतों को ''सेवा टहल करने वाली आत्माएं'' ''जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं'' (इब्रानियों 1:14)। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के संरक्षक स्वर्गदूत होने के विचार का नये नियम में स्पष्ट समर्थन नहीं है। (देखें *एप्लिकेशन: गार्डियन एंजल्स [18:10],* पृष्ठ 146-47)।

यहां बताए गए स्वर्गदूतों की पहुंच परमेश्वर के सिंहासन तक है (देखें लूका 1:19)। ''का मुंह देखते'' एक अभिव्यक्ति है जो प्राचीन दरबार में आदर का स्थान पाने वाले और राजा की उपस्थिति में विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति की बात करता है (1 राजाओं 10:8; 2 राजाओं 25:19; एस्तेर 1:14; यिर्मयाह 52:25)।[11] जिस प्रकार से स्वर्गदूत हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं, वह पृथ्वी पर अपने बच्चों पर सदा नज़र रखता है। यीशु यह दावा करने के लिए कि ''स्वर्ग का परमेश्वर पृथ्वी पर अपने छोटे से छोटे लोगों की परिस्थिति से अवगत है'' स्पष्ट भाषा का इस्तेमाल कर रहा था।[12] यदि परमेश्वर के ''छोटे से छोटे व्यक्ति'' से दुर्व्यवहार किया जाता है तो वह इसे नज़रअन्दाज नहीं करेगा।

आयत 11. [क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।] अति प्राचीन हस्तलेखों में यह आयत नहीं मिलती है। NASB ने इस आयत को कोष्ठकों में रखा है, जबकि अधिकतर आधुनिक अनुवादों में इसे टिप्पणी में दिया गया है (NEB; TEV; NIV; NRSV; NJB; NCV; CEV; NLT)। ब्रूस एम. मेज़गर ने सुझाव दिया है कि इसे आयत 10 से आयत 12 में आसानी से बदलने के लिए लूका से नकल किया गया था।[13] ''ढूंढ़ने'' शब्द को जोड़कर यही बात लूका 19:10 में मिलती है: ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'' मत्ती में शामिल की गई आयत निश्चित रूप से सच्चाई ही बताती है। यीशु खोए हुओं का उद्धार करने के लिए ही आया, और आयतें 12 से 14 में दिया गया दृष्टांत इस तथ्य को समझाता है।

आयत 12. यीशु यह पूछते हुए कि ''**तुम क्या सोचते हो?**'' अपना दृष्टांत देने लगा। ऐसा उस ने चेलों का ध्यान खींचने और उनकी सोच को उभारने के लिए हो सकता है (देखें 17:25; 21:28; 22:42)।

मत्ती में यह दृष्टांत अकेला खड़ा है, परन्तु लूका में यह खोई हुई वस्तुओं के तीन दृष्टांतों में से एक है (लूका 15)। अन्य दो दृष्टांत खोए हुए सिक्के और खोए हुए लड़के के हैं, जिसमें बाद वाले दृष्टांत को आम तौर पर ''उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत'' कहा जाता है। खोई हुई **भेड़** के सम्बन्ध में स्पष्टतया ऐसे ही दृष्टांत दो अलग-अलग अवसरों पर दिए गए थे। मत्ती में दृष्टांत यीशु के चेलों के लिए था (18:1) जबकि लूका में इसका निशाना फरीसी और शास्त्री लोग थे (लूका 15:2, 3)। यही बात दोनों कहानियों के विवरणों के थोड़े से अन्तरों का ब्यान करती हैं।

भेड़ के रूप में परमेश्वर के लोगों का चित्रण पुराने और नये दोनों नियमों में आम मिलता है (9:36; 10:5, 6 पर टिप्पणियां देखें)। उदाहरणों में **निन्यानवे** और **एक** संख्याओं का इस्तेमाल करना भी यहूदी धर्म में आम बात थी।[14] कीनर के अनुसार **सौ** भेड़ें झुण्ड के लिए औसतन मानी

जाती थीं क्योंकि इसे एक चरवाहे द्वारा आसानी से चराया जा सकता था।[15] इतनी भेड़ों में काम करते हुए, दृष्टांत वाला चरवाहा यह पता लगा सकता था कि उनमें से एक भेड़ गुम हो गई है। यीशु ने कहा कि अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और उन्हें बड़ी इच्छी तरह से जानता है (यूहन्ना 10:1-18)। ऐसा नहीं है कि निन्यानवे भेड़ें जो खोई नहीं थीं उनका महत्व कम हो गया हो परन्तु खोई हुई एक भेड़ कई प्रकार से गम्भीर खतरे में थी। इस कारण यह आवश्यक था कि चरवाहा खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ता। **क्या छोड़कर न ढूंढ़ेगा** वाक्यांश में नकारात्मक (*ouchi*) पर जोर इस बात को दिखाता है कि यह पक्के उत्तर का अभास कराता है कि बेशक चरवाहा उस खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ेगा।

आयत 13. यीशु ने आगे कहा, **''यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो ... वह उन निन्नयानवे भेड़ों के लिए जो भटकी नहीं थी, इतना आनन्द नहीं करेगा जितना कि इस भेड़ के लिए करेगा।**'' ''यदि'' इस बात को मान लेता है कि कई बार भेड़ मिल नहीं सकती, यह दूर कहीं निकल गई हो सकती है या किसी जंगली जानवर द्वारा मार डाली गई हो सकती है। परन्तु यदि चरवाहे को खोई हुई भेड़ मिल जाए, तो उसके लिए बहुत आनन्द किया जाता। दृष्टांत के लूका के संस्करण में, यीशु ने जोड़ा, ''जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कंधे पर उठा लेता'' है (लूका 15:5)। चरवाहा भेड़ की आवश्यकताओं को पूरा करता और उसे झुण्ड में ले आता और फिर उस भेड़ के मिल जाने के कारण अपने मित्रों और पड़ोसियों के साथ जश्न मनाता (लूका 15:6)। इस दृष्टांत को प्रासंगिक बनाते हुए यीशु ने कहा कि ''एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नयानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं'' (लूका 15:7)।

आयत 14. दृष्टांत का अभिप्राय परमेश्वर की इच्छा को दिखाना था कि **इन छोटों में से एक भी नष्ट** न हो। वह नहीं चाहता कि कोई भी सदा के लिए उससे अलग रहे (यूहन्ना 3:16; 2 पतरस 3:9; देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10)। उस ने खोई हुई भेड़ों की खोज में संसार में अच्छे चरवाहे, अपने पुत्र को भेज दिया है। यह दृष्टांत प्रत्येक व्यक्ति के महत्व पर ज़ोर देता है और हमें याद दिलाता है कि लोगों में यीशु की दिलचस्पी बहुत ही व्यक्तिगत और निजी थी।[16]

झगड़े निपटानाः अनुशासन और सहभागिता (18:15-20)

[15]**''यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया।** [16]**यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि 'हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए।'** [17]**यदि वह उन की भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने तो तू उसे अन्यजातियों और महसूल लेने वाले जैसा जान।** [18]**''मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बांधेगा और जो कुछ हम पृथ्वी पर खोलेंगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।**

[19]**''फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर मांगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन के लिए हो जाएगी।**

[20]क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उन के बीच में होता हूं।''

यीशु ने क्षमा पर बहुत शिक्षा दी थी परन्तु उस ने कभी यह संकेत नहीं दिया कि उसके अनुयायी पाप को नज़अन्दाज कर देंगे। यहां पर उस ने भाइयों के साथ जो पाप करते हैं, व्यवहार करने के लिए सही ढंग की रूपरेखा दी (18:15-17)। इस निर्देश के बाद उस ने अपने प्रेरितों पर दूसरों के लिए बांधने और खोलने की शर्तों का प्रकाशन दिया (18:18-20)।

आयत 15. इस आयत का आरम्भ सशर्त वाक्यांश **यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध अपराध करे** के साथ होता है। कई प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में (हिन्दी की तरह-अनुवादक) ''तेरे विरुद्ध'' अतिरिक्त उपसर्गीय वाक्यांश है, जो इस वाक्यांश को और भी स्पष्ट और व्यक्तिगत बना देता है।[17] वैटिकेनुस और सीनेकिटुस में चाहे ''तेरे विरुद्ध'' नहीं मिलता है पर अधिकतर आधुनिक अनुवादों में यह पाया जाता है (TEV; NIV; NRSV; NKJV; CEV; NCV; NLT)। विलियम हैंड्रिक्सन का मानना था कि ये शब्द मूल में हों या न पर गलती करने वाले भाई के साथ अकेले में बात करने की आज्ञा व्यक्तिगत अपराध का संकेत देती है।[18] एच. एल. मैंसल ने संदर्भ की ओर ध्यान दिलाया है। अगली चर्चा यीशु में विश्वास करने वाले छोटे से छोटे लोगों को ठोकर देने के बारे में नहीं थी, इस कारण उस ने कहा कि यह मान लेना तर्कसंगत है कि इसमें शामिल पाप व्यक्तिगत अपराध ही था।[19] इसके अलावा आयत 21 में पतरस का प्रवचन इस विचार को समर्थन देता हुआ प्रतीत होता है कि यीशु किसी दूसरे मसीही के विरुद्ध किए गए व्यक्तिगत पाप की बात कर रहा था।

''भाई'' (*adelphos*) शब्द यीशु के आत्मिक परिवार (12:46-50; 25:40; 28:10) अर्थात कलीसिया (16:18; 18:17) के लोगों का संकेत देता है। यहां पर नर और नारी दोनों को शामिल करते हुए यह सामान्य अर्थ में है। परमेश्वर के किसी भी बालक को जब मसीह में उस का कोई भाई या बहन उसके विरुद्ध पाप करता है, उस का सामना करना आवश्यक है। यह गलतफहमी, उपेक्षा, स्पष्ट गलती, मामूली बात पर विचार की भिन्नता ही नहीं है। यीशु ''अपराध'' या पाप की बात कर रहा था; मत्ती में ''पापों'' के लिए सबसे बुनियादी यूनानी शब्द (*hamartanō*) का इस्तेमाल किया है।

जिसके विरुद्ध पाप किया गया है उस की जिम्मेदारी है। उसे कोमलता और नम्रता से अपराध करने वाले या वाली का सामना करना आवश्यक है (गलातियों 6:1)। यीशु ने कहा, **''जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा।''** अनुवादित शब्द ''बातचीत करके उसे समझा'' के यूनानी शब्द (*elenchō*) का अर्थ ''रौशनी में लाना,'' ''दोष लगाना,'' या ''डांटना'' है। सामान्य व्यवहार यह पाया जाता है कि ''मेरी गलती नहीं थी! वह मेरे पास आए।'' परन्तु प्रभु ने कहा, ''तू उसके पास जा।''[20] जिस भाई या बहन का अपराध हुआ है उसे अपराध करने वाले के साथ बात करनी चाहिए है न कि दूसरों के साथ। मामला जहां तक हो सके व्यक्तिगत रखा जाना चाहिए।

यीशु ने कहा, **''यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया।''** जिसका अपराध हुआ है उसे क्षमा देना आवश्यक है; नहीं तो उस भाई को ''जीत'' नहीं पाएगा। सबसे बढ़कर उसे अपराध करने वाले के पास उसे जीतने के विचार से जाना चाहिए न कि बहस में जीतने के

विचार से। ''पाना'' के लिए यूनानी शब्द (*kerdainō*) का इस्तेमाल खोए हुओं को बचाने के सम्बन्ध में किया गया है (1 कुरिन्थियों 9:19-24), परन्तु भटके हुए को वापस लाना उतना ही महत्वपूर्ण है। याकूब ने लिखा है, ''हे मेरे भाइयो, यदि तुम में कोई सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई उस को फेर लाए। तो वह यह जान ले, कि जो कोई किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा, वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा, और अनेक पापों पर परदा डालेगा'' (याकूब 5:19, 20; देखें यहूदा 22, 23)।

आयत 16. यदि पहली बार समझाने से पछतावा नहीं होता तो यीशु ने कहा कि दूसरी बार जाया जाए: ''**यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा**।'' जिसका अपराध हुआ है उसके साथ ''एक दो जन'' से **दो या तीन गवाहों** के सामने हुई बातचीत बन जाएगी। किसी झगड़े को निपटाने या किसी तथ्य की पुष्टि करने के लिए और लोगों को शामिल करना बहुत पुराना नियम है (गिनती 35:30; व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; 2 कुरिन्थियों 13:1)। ऐसे हस्तक्षेप से यह सुनिश्चित हो जाता है कि बातचीत को एक से अधिक लोगों ने सुना और जो कुछ हुआ है वह उन्हें पता है, ताकि **हर एक बात ठहराई जाए**। यह दोहरा उद्देश्य भी पूरा हो जाता है: हो सकता है कि जिसका अपराध किया गया है जितना वह मामले को बड़ा मानता हो उतना हो न, जिसमें तीसरा पक्ष उसे यह समझाने में सहायता कर सकता है कि वास्तव में क्या हुआ और मामले को सुलझा सकता है।

आयत 17. दूसरी तरफ समझाने पर यदि आपराध करने वाला मन नहीं फिराता, तो जो अकेले में बातचीत हुई थी उसे सार्वजनिक कर दिया जाए। इसे **कलीसिया** के सामने अर्थात स्थानीय मण्डली के पास ले जाया जाए (16:18 पर टिप्पणियां देखें)। स्थिति इतनी गम्भीर है कि यदि पापी मन न फिराए तो उस की आत्मा खो सकती है। यह सच है इस कारण पूर्ण कलीसिया की प्रार्थनाएं और ताड़ना उस पापी के लिए उसे आवश्यक मन फिराव करने के लिए होती हैं। फिर से, बात भटके हुए भाई को वापस लाने की है (18:15)।

यदि यह तीसरी बार समझाना भी काम न आए, तो अपश्चातापी ही अपराध करने वाले को **कलीसिया** द्वारा अनुशासित किया जाए। इस काम में भी जिसमें विद्रोही भाई को संगति से निकाल दिया जाता है, लक्ष्य अभी भी मन फिराव और उद्धार का ही है (1 कुरिन्थियों 5:5; 2 थिस्सलुनीकियों 3:14, 15; 1 तीमुथियुस 1:20; तीतुस 3:10, 11)। यीशु ने कहा, ''**तो तू उसे अन्यजातियों और महसूल लेने वाले जैसा जान**।'' अन्यजातियां और महसूल लेने वाले अपने दुष्ट मार्गों के लिए प्रसिद्ध थे (5:46, 47 पर टिप्पणियां देखें)। आमतौर पर यहूदी लोग उनके साथ न खाते, न उनके साथ सफर करते या न ही उनकी सम्पत्ति अपने घरों में लाते थे। उनका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं होता। चाहे यीशु ने इस व्यवहार की अनदेखी तो नहीं की पर उस ने अपने उदाहरणों में कई बार इसका इस्तेमाल किया (उदाहरण के लिए देखें, 8:5-13; 9:9-13; 18:17) I[21]

मत्ती 18:15-17 में यीशु द्वारा दिए गए ढंग की रूपरेखा यहूदी मत में इस्तेमाल किए जाने वाले ढंग के जैसी ही है। कुमरान के समुदाय के बीच जिसका अपराध किया जाता था उसे अपराध होने वाले दिन ही अपने साथी को डांटने को कहा जाता था (देखें लैव्यव्यवस्था 19:17)। उसे मामले को आम सभा में लाने से गवाहों के साथ अपराध करने वाले का सामना

करना होता था।[22]

कुमरान में रहने वाले विद्रोही लोगों को समाज से निकाल दिया जाता था। यहूदी मत की मुख्यधारा में लोगों को आराधनालय से भी निकाला जा सकता था (यूहन्ना 9:22; 12:42)। आराधनालय के अगुवे लोगों को अनुशासित करने के लिए कोड़े मारने का भी इस्तेमाल करते थे (10:17)[23] जो मसीहियत में कहीं नहीं मिलता।

आयत 18. फिर यीशु ने कहा, ''**जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बांधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलेंगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।**'' यह कहते हुए प्रभु प्रेरितों की बात कर रहा था (देखें 18:1)। स्पष्ट रूप में यह कलीसिया के लिए भी था (देखें 18:17)। यह वही बात है, जो पतरस को भी कही थी (16:19 पर टिप्पणियां देखें), सो उसे अन्य प्रेरितों के ऊपर कोई विशेष पद नहीं दिया गया (देखें यूहन्ना 20:23)। इस संदर्भ में कही गई बात का अर्थ निश्चय ही यह है कि यदि पृथ्वी पर किसी पापी को उचित कारण से कलीसिया से निकाला गया है (देखें 1 कुरिन्थियों 5:11, 12) तो कलीसिया का निर्णय स्वर्ग के दरबार में पहले से ले लिए गए निर्णय की झलक ही है। अपश्चात्तापी पापी को कलीसिया की संगति में से निकालकर, कलीसिया के लोग स्वर्ग में लिए गए निर्णय का ही समर्थन कर रहे हैं।[24] यह ध्यान देने वाली बात है कि जोसेफस ने संगति रखने और संगति से निकालने के सम्बन्ध में ''बांधने'' और ''खोलने'' के शब्दों का इस्तेमाल किया, न कि केवल यह घोषणा करने के लिए कि क्या आवश्यक है और क्या नहीं।[25]

आयत 19. यीशु ने आगे कहा, ''**यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर मांगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उन के लिए हो जाएगी।**'' ''एक मन'' के लिए यूनानी शब्द (*sumphōneō*) अंग्रेजी भाषा के शब्द ''symphony'' (सुरों का मिलान) के पीछे है। यहां पर ''दो'' (जो आयत 16 में कही गई बात को याद दिलाता है) एक-दूसरे के साथ सुर में सुर मिलाते हैं। यदि दो विश्वासी चेले इस बात से सहमत हों कि किसी पापी ने मन फिरा लिया है या नहीं फिराया है, तो वे पक्का जान सकते हैं कि उनके निर्णय से परमेश्वर सहमत होगा। ऐसी प्रतिज्ञा परमेश्वर को चंचल लोगों की सनक को मानने को विवश कर देती है। इसका अर्थ केवल इतना है कि जो सही है और जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है उसे करने पर दो चेले जो भी मांगें वह हो जाएगा (देखें 1 यूहन्ना 5:14, 15)।

आयत 20. इस आयत का इस्तेमाल आम तौर पर **दो या तीन** मसीही लोगों के परमेश्वर की आराधना करने के सम्बन्ध में किया जाता है। इकट्ठा होना बेशक इसमें है। परन्तु इसे इसी संदर्भ के अन्दर समझा जाना आवश्यक है। यहां पर दो या तीन लोगों ने आराधना के लिए **इकट्ठे** नहीं होना था। उन्होंने अपराध करने वाले किसी भाई या बहन के पश्चात्ताप करने या न करने की पुष्टि करने के लिए इकट्ठा होना था। यीशु ने ऐसे अवसरों पर ''**मैं वहां उनके बीच में होता हूं**'' कहकर अपनी उपस्थिति और समर्थन का वचन दिया।

यह बात रब्बियों की शिक्षा से मेल खाती है। वे कहते थे कि जब दो या तीन लोग न्याय करने के लिए बैठ जाते हैं, तो शिकाइनाह (ईश्वरीय उपस्थिति) उनके बीच में होती है।[26] यीशु सचमुच में ''परमेश्वर हमारे साथ'' है (1:23) और, और कहें तो उस ने यह कि अन्त तक अपनी कलीसिया के साथ अपनी उपस्थिति का वचन दिया है (28:20)।

निर्दयी सेवक का दृष्टांतः क्षमा (18:21-35)

[21]तब पतरस ने पास आकर, उस से कहा, ''हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं? क्या सात बार तक?'' [22]यीशु ने उस से कहा, ''मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुणे तक।''

[23]''इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। [24]जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उस के सामने लाया गया जो दस हजार तोड़े का कर्जदार था। [25]जब कि चुकाने को उस के पास कुछ न था, तो उस के स्वामी ने कहा, 'यह और इस की पत्नी और बाल-बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।' [26]इस पर उस दास ने गिर कर उसे प्रणाम किया, और कहा, 'हे स्वामी धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।' [27]तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उस का कर्ज भी क्षमा किया। [28]परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उस के संगी दासों में से एक उस को मिला जो उसके सौ दीनार का कर्जदार था, उस ने उसे पकड़ कर उस का गला घोंटा और कहा, 'जो कुछ तुझ पर कर्ज है भर दे।' [29]इस पर उस का संगी दास गिर कर, उस से विनती करने लगा।'धीरज धर, मैं सब भर दूंगा।' [30]उस ने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया कि जब तक कर्ज भर न दे, तब तक वहीं रहे। [31]उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। [32]तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उससे कहा, 'हे दुष्ट दास, तूने जो मुझसे विनती की, तो मैंने तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा कर दिया। [33]इसलिए जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी?' [34]और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे। [35]इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा।''

यीशु की शिक्षा में अब क्षमा पर ध्यान है। जो कुछ उस ने अपराध करने वाले भाई को सुधारने के लिए कहा था उससे पतरस को व्यक्तिगत अपराध के लिए किसी भाई को क्षमा करने के बारे में पूछने की प्रेरणा मिली (18:21)। प्रभु ने पतरस के प्रश्न का उत्तर दिया (18:22) और फिर निर्दयी सेवक के दृष्टांत के साथ क्षमा के नियम को समझाया (18:23-35)।

आयत 21. एक बार फिर मत्ती में वह दृश्य है जिसमें **पतरस** प्रमुख है (14:28-32; 15:15; 16:16-19, 22, 23; 17:4, 24-27)। इस अवसर पर, प्रेरित ने पूछा, **''हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं?''** ''क्षमा करूं'' के लिए यूनानी शब्द (*aphiēmi*) का मूल अर्थ है ''जाने देना'' या ''दूर भेजना।'' शिक्षा के इस पल में नैतिक कर्ज रद्द करने के लिए शब्द का इस्तेमाल किया गया। पतरस को लग रहा था कि यह सुझाव देकर कि कोई किसी को **सात बार तक** क्षमा करके अत्यधिक दयालुता दिखा रहा है। आखिर यहूदी रब्बियों की शिक्षा थी कि किसी को तीन बार क्षमा करना काफी है। रब्बी जोस बेन ज्यूडाह का कहना था, ''यदि कोई अपराध करे, तो पहली, दूसरी और तीसरी बार उसे क्षमा कर

दिया जाता है, चौथी बार उसे क्षमा नहीं किया जाता।''[27]

आयत 22. उस प्रशंसा के विपरीत जिसकी पतरस को उम्मीद थी कि मिलेगी, प्रभु से उसे थोड़ी सी डांट ही मिल गई: ''**मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक, वरन सात बार के सत्तर गुणे तक**।'' यूनानी भाषा के वाक्यांश (*hebdomēkontakis hepta*) का अनुवाद कई संस्करणों में ''सतहत्तर बार'' हुआ है (NIV; NRSV; NCB; CEV; NJB)। यही यूनानी वाक्यांश सप्तति अनुवाद में उत्पत्ति 4:24 में मिलता है। NASB में इस आयत का अनुवाद है, ''यदि कैन का बदला सात गुणा लिया जाता है, तो लामेक का सतहत्तर गुणा।'' लामेक की बात चाहे यहां बदला लेने के लिए एक फॉर्मूला है पर यीशु की बात क्षमा करने के लिए फॉर्मूला है।

यीशु के कहने का अर्थ निश्चय ही यह था कि उसके चेले किसी भाई को अनगिणत बार क्षमा करें। ''सात'' का अंक इब्रानी साहित्य में पूर्ण, या सम्पूर्ण अन्त माना जाता है। ''सात'' या इसका कोई भी गुणांक पूर्ण राशि का संकेत देता है। इसलिए यीशु यह नहीं कह रहा था कि ''सतहत्तर बार क्षमा कर दो पर इसके आगे नहीं''; बल्कि यह संख्या ''जितनी बार आवश्यक हो'' के लिए है (देखें लूका 17:3, 4)।

आयत 23. क्षमा मांगने वालों के लिए असीमित बार क्षमा देने का नियम ठहराने के बाद यीशु ने क्षमा न करने वाले दास का दृष्टांत दिया (18:23–34)। दृष्टांत का आरम्भ **उस राजा** से होता है, जिसने **अपने दासों से लेखा** लेने के लिए उन्हें बुलाया।

आयत 24. राजा के अपना काम आरम्भ करने पर एक दास को **जो दस हज़ार तोड़े का कर्जदार था**, आगे लाया गया। ''तोड़ा'' (*talanton*) भार की सबसे बड़ी इकाई थी जो लगभग पचहत्तर पौंड (1 पौंड = लगभग 450 ग्राम) जितनी होती थी। निर्गमन 38:25, 26 से अनुमान लगाया गया है कि एक तोड़ा तीन हज़ार शेकेल के बराबर था।[28] मत्ती ने यह नहीं बताया कि दृष्टांत में दिया गया कर्ज सोना, चांदी या तांबा था। तौभी बहुत बड़ी राशि जो शायद ''करोड़ों डॉलर''[29] में थी, उस दास की निराशाजनक स्थिति को दिखाती है। उस का कर्ज अरखिलाउस (यहूदिया, इदुमिया और सामरिया में), अन्तिपास (गलील और पिरिया में) और फिलिप्प द्वितीय (त्रखुनितुस, इतूरिया, गोलनितुस और औरनितिस) द्वारा इकट्ठा किए गए नौ सो तोड़ों के वार्षिक कर से कहीं अधिक था।[30]

आयत 25. चुकाने के लिए यूनानी शब्द (*apodidōmi*) जिसका अनुवाद ''लौटाना'' भी हुआ है, पूरे दृष्टांत में कई बार दोहराया गया है (18:25, 26, 28, 29, 30, 34)। अडोल्फ डेसमन ने कहा है कि ''मैं चुकाउंगा'' प्राचीन संसार से कर्जदारों से हस्तलिखित नोटों में आम तौर पर पाया जाने वाला रटा रटाया फॉर्मूला है।[31] दास के पास कर्ज चुकाने के लिए इतना धन कभी नहीं होना था, इस कारण उसके स्वामी ने आदेश दिया कि इसे **और इसकी पत्नी और बाल-बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए** (देखें निर्गमन 22:3; 2 राजाओं 4:1; नहेम्याह 5:4, 5)।[32] ऐसा करके स्वामी को कम से कम कर्ज का थोड़ा सा भाग मिल जाता था।

आयत 26. दीनता और पश्चात्ताप की मुद्रा में **उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया**। उस ने राजा से **धीरज की** भीख मांगी और कर्ज **भर** देने के लिए समय मांगा। उस की प्रतिज्ञा में

विडम्बना पाई जाती है, क्योंकि उसके लिए कभी भी इतनी बड़ी राशि लौटाना असम्भव होना था।

आयत 27. उस आदमी की दोहाई सुनकर राजा ने उस पर **तरस खाया**। मत्ती की पुस्तक में यीशु को भी आम तौर पर लोगों के लिए तरस से काम करते हुए दिखाया गया है (9:36; 14:14; 15:32; 20:34)। राजा ने **उसे छोड़ दिया और उस का कर्ज भी क्षमा किया**। यह पूरी तरह से अनुग्रह का एक कार्य था। कल्पना की जा सकती है कि इस आदमी को कितनी राहत मिली होगी!

आयत 28. जैसे ही क्षमा किया हुआ **दास** अपने स्वामी के घर से निकला उसे एक और दास **मिला** जो **उसके सौ दीनार का कर्जदार था**। दीनार रोमी सरकार का चांदी का सिक्का होता था, जो हाथ से काम करने वाले मजदूर की एक दिन की मजदूरी के बराबर था (20:2)। इसलिए एक सौ दीनार की कीमत एक सौ दिन (लगभग चार महीने) की मजदूरी जितनी थी। एक सौ दिन के काम की मजदूरी काफ़ी बड़ी राशि थी; परन्तु उस दास के राजा के कर्ज के सामने यह बहुत छोटी थी।[33]

पहला आदमी इतना नाराज हुआ कि उस ने अपने साथी दास को **पकड़ कर उस का गला घोंटा**, कि उस का कर्ज अदा करे। यह तो ऐसा था जैसे वह उस में से पैसे निचोड़ने की कोशिश कर रहा हो, परन्तु स्पष्टतया साथी दास के पास देने को कुछ नहीं था।[34]

आयत 29. राजा के सामने पहले देनदार की तरह (18:26), दूसरा कर्जदार अपने संगी दास से **धीरज धरने** के लिए और कर्ज चुकाने में समय देने की **विनती करने लगा**। इस प्रकार कर्ज की अदायगी कहीं अधिक सम्भव होनी थी।

आयत 30. पहला आदमी अपने संगी दास के साथ निर्दयी था और उस ने उसे जब तक कर्ज नहीं चुकाता तब तक **बंदीगृह में** (देखें 5:25) डाल दिया। दोनों ही मामलों में कैदी से जबर्दस्ती काम करवाया जाना था। इन भयंकर परिस्थितियों से वास्तव में कर्ज चुकाना और भी कठिन हो गया।

आयत 31. दूसरे **दासों** ने देखा कि उस दुष्ट ने क्या किया है तो वे इस अन्याय से **बहुत उदास हुए**। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने अपने स्वामी अर्थात राजा को **पूरा हाल बता दिया**।

आयत 32. राजा ने पहले वाले आदमी को **दुष्ट दास** कहा और उसे इतने बड़े **कर्ज** के इस कारण क्षमा करने की बात याद दिलाई, क्योंकि उस ने उससे **विनती की** थी।

आयत 33. उस दास को जिस पर राजा की **दया** हुई थी अपने **संगी दास** पर भी दया करनी चाहिए थी। इसी प्रकार, परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह को पाने वालों के लिए अपने संगी लोगों के साथ व्यवहार करते समय इन्हीं गुणों को दिखाना आवश्यक है। यूहन्ना ने लिखा है, ''हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए'' (1 यूहन्ना 4:11)।

आयत 34. राजा दुष्ट दास के विरुद्ध इतना **क्रोध में आया** कि उस ने उसे **दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज न भर दे, तब तक उनके हाथ में रहे**। राजा की दया (18:27) क्रोध में बदल गई क्योंकि क्षमा पाए हुए दास ने वही क्षमा नहीं दी जो उसे मिली थी। परमेश्वर चाहे धीरज रखने वाला है (18:26) परन्तु उस का धीरज सदा तक नहीं रहेगा (22:7)।

सुझाव दिया गया है कि ''दण्ड देने वालों'' और ''जेलरों'' (NIV) ने दुष्ट दास को धन के उसके किसी भी गुप्त स्रोत का पता लगाने के लिए उससे पूछताछ करनी थी।[35] कर्जदारों के लिए सारा कर्ज चुकाने तक जेल में कठिन परिश्रम करना आवश्यक होता था। इस आदमी ने कभी भी कर्ज चुका नहीं पाना था और अपना शेष जीवन दुख ही भोगना था।

आयत 35. यीशु ने इस दृष्टांत को प्रासंगिक बनते हुए समाप्त किया: ''**इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा**।'' दृष्टांत में राजा परमेश्वर पिता को बताया गया है। क्षमा न करने वाला दास यीशु के चेलों का सांकेतिक चिह्न है, जिन्हें परमेश्वर की ओर से क्षमा मिली है परन्तु वे दूसरे विश्वासियों को जिन्होंने उनका पाप किया है क्षमा देने से इनकार करते हैं। पहले दास का इतना बड़ा कर्ज बहुत से पापों की ओर ध्यान दिलाता है जो परमेश्वर ने हर मसीही के क्षमा किए हैं, जबकि छोटा कर्ज उन कुछ पापों की बात है जो दूसरे दास के द्वारा दिया जाना था जो किसी विश्वासी के विरुद्ध उसके भाइयों द्वारा किया गया हो सकता है। अपने साथी विश्वासियों को क्षमा न करने की इच्छा परमेश्वर को उसे क्षमा करने की अनिच्छा का कारण बन जाएगी (6:15; इफिसियों 4:32; याकूब 2:13)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

राज्य में बड़ा होना (18:1-4)

यीशु ने बताया कि बड़े होने के मार्ग केवल दीनता और सेवा के फाटक में से होकर पहुंचा जा सकता है। मसीही लोगों के लिए घमण्ड और प्रमुखता की सांसारिक सोच को नकारते रहना आवश्यक है (20:25; 1 पतरस 5:3; 3 यूहन्ना 9, 10)। बड़ा होना अपने रास्ते में आने वाले किसी भी व्यक्ति को पीछे करके, सफलता की सीढ़ी चढ़ना नहीं है। इसके विपरीत यह दूसरों के जीवनों के लिए आशीष बनकर, विनम्र सेवा से पाया जा सकता है (20:26-28; यूहन्ना 13:1-17)।

डेविड स्टिवर्ट

प्रभु की भेड़ों की परवाह करना (18:10-35)

अपने चेलों को समझाते हुए यीशु ने उन्हें महत्वपूर्ण सबक दिए जिन्हें आज के उसके चेलों द्वारा माना जाना आवश्यक है (18:10-35)।

मसीही लोग इतना चौकस हों कि वे छोटे से छोटों का ध्यान रखें (18:10-14)। हम दूसरों को घटिया न समझें। परमेश्वर उनसे प्रेम करता है, स्वर्गदूत उनकी रखवाली करते हैं (18:10; देखें इब्रानियों 1:14) और यीशु उन्हें बचाने के लिए आया (18:11)। परमेश्वर के सामने हर किसी का महत्व है (18:12-14)।

मसीही लोग इतने चौकस हों कि जो पाप करते हैं और मन नहीं फिराते उन्हें समझाएं (18:15-20)। कलीसिया को अपने आपको शुद्ध रखने की जिम्मेदारी दी गई है, जैसे पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया को बताया (1 कुरिन्थियों 5:4-11)। यदि कलीसिया में खुलेआम

पाप को छूट दी जाती है तो मसीह का काम प्रभावित होता है। पापी को परमेश्वर की ओर वापस लाने के लिए अनुशासन आवश्यक है।

मसीही लोग इतनी परवाह करें कि वे क्षमा कर सकें (18:21-35)। पतरस के प्रश्न पर, प्रभु के उत्तर पर और क्षमा के दृष्टांत पर हम ध्यान से विचार करें।

संरक्षक स्वर्गदूत (18:10)

मत्ती 18:10 यीशु ने कहा, ''इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना क्योंकि ''स्वर्ग में उनके दूत मेरे पिता का मुंह सदा देखते हैं।'' कुछ लोगों ने ''उनके दूत'' वाक्यांश का अर्थ ''संरक्षक स्वर्गदूत'' के रूप में बताया है। बाइबल इस शब्द का इस्तेमाल नहीं करती, परन्तु और अस्पष्ट आयतों से यह प्रभाव मिल सकता है कि ऐसा है (उत्पत्ति 48:16; भजन संहिता 34:7; 91:11, 12; दानिय्येल 4:13; 10:13, 21; 12:1; प्रेरितों 12:13-15)। इसके अलावा बाइबल के बाहर के कई स्रोत इस विचार का समर्थन करते हैं।[36]

ऐसे विशेष सवर्गदूतों के आधुनिक विश्वासों का अधिकतर भाग मनुष्य की सोच से निकला है न कि परमेश्वर के वचन से। कइयों का मानना है कि हर आत्मा का जन्म से पहले या जन्म के समय एक संरक्षक स्वर्गदूत होता है। अन्यों का मानना है कि यह सुरक्षा केवल मसीही लोगों को मिलती है और जब तक कोई परमेश्वर का वफादार रहे तब तक रहती है। एक शिक्षा में यह माना जाता है कि संरक्षक स्वर्गदूत का उद्देश्य व्यक्ति को हानि या खतरे से बचाना है। उस भूमिका में स्वर्गदूत व्यक्ति को सुरक्षित मार्गों में ले जाता और किसी भी खतरे से दूर कर देता है। एक और शिक्षा है कि संरक्षक स्वर्गदूत विवेक को दी गई भूमिका जैसा काम करते हैं। हम में से कइयों ने किसी व्यक्ति के एक कंधे पर अच्छा स्वर्गदूत और दूसरे कंधे पर बुरा स्वर्गदूत वाली तस्वीरें देखी होंगी, जिनमें उस व्यक्ति को विपरीत दिशाओं में ले जाने की कोशिश की जा रही होती है।[37]

यदि हर मसीही का एक संरक्षक स्वर्गदूत है जो उस की रक्षा करता है, तो हम में से हर किसी पर मुसीबत आने पर दोष किसका होता है? क्या संरक्षक स्वर्गदूत असफल हुआ? क्या मसीही व्यक्ति को गलत या बेपहरवाह स्वर्गदूत मिल गया? व्यक्तिगत संरक्षक स्वर्गदूत के विचार से कुछ विश्वासियों को शांति मिल सकती है, पर पवित्र शास्त्र में इसके प्रमाण की कमी है। बाइबल हमें बताती है कि आज स्वर्गदूत काम तो करते हैं पर आवश्यक नहीं कि वे हर व्यक्ति के संरक्षक स्वर्गदूतों की तरह काम करते हैं। वे परमेश्वर का ईश्वरीय उपाय करने वालों के रूप में काम करते हैं (इब्रानियों 1:14)। स्वर्गदूतों से प्रभावित होना या उनकी उपासना करना ठीक नहीं है (कुलुस्सियों 2:18; प्रकाशितवाक्य 22:8, 9), क्योंकि वे भी सृजा गया है (भजन संहिता 148:1-6)। हमारा फोकस मसीह पर होना चाहिए (इब्रानियों 1:5, 6)।

झगड़े को निपटाना (18:15-20)

इसमें दूसरों का अपराध करने वाले और मन न फिराने वाले मसीही लोगों से व्यवहार करने का नियम तो है, पर इस वचन को आम तौर पर बहुत अधिक व्यापक व्याख्याएं दी जाती हैं जो वास्तव में प्रासंगिक नहीं है। यह वचन विशेष रूप में एक मसीही द्वारा किसी दूसरे मसीही का अपराध करने अर्थात व्यक्तिगत या निजी अपराधों से सम्बन्धित है। इस मामले में जब अकेले में

अपराध से मन नहीं फिराया जाता है तो इसे पूरी कलीसिया में सार्वजनिक किया जाना चाहिए। ऐसा इस उम्मीद से किया जाता है कि ऐसा कार्य अपराध करने वाले को मन फिराव के लिए विवश करेगा।

परमेश्वर की क्षमा बनाम हमारी क्षमा (18:21-35)

मत्ती 18:21-35 उन स्थानों में से एक है, जहां पर यीशु ने क्षमा की आशीष के बारे में बताया। उस ने समझाया कि भाइयों के बीच होने वाले झगड़ों से कैसे निपटा जाए और एक दृष्टांत में क्षमा की शिक्षा दी।

क्षमा करने की परमेश्वर की इच्छा। इस दृष्टांत में पहले दास ने इतना कर्ज देना था जिसे चुकाया नहीं जा सकता था। उसके स्वामी ने, जो परमेश्वर को दर्शाता है, उस का सारा कर्ज माफ कर दिया। यीशु हमारी अपनी क्षमा से परमेश्वर की क्षमा में अन्तर बता रहा था। क्षमा पाए हुए व्यक्ति ने एक दूसरे दास को क्षमा करने से इनकार कर दिया, जिसने उसके पहले कर्ज को तुलना में बहुत कम कर्ज देना था। अपने साथी दास के साथ उसके व्यवहार की बात जब उसके स्वामी को बताई गई, तो उसे लेखा देने के लिए बुलाया गया और कर्जदार को जेल में सताए जाने के लिए भेज दिया गया (18:34)।

हर पाप को क्षमा करने की परमेश्वर की इच्छा। सब मसीही लोग पापी हैं जिन्हें परमेश्वर द्वारा क्षमा किया गया है। क्रूस का संदेश पाप के उस बड़े कर्ज के बारे में है जो हमें परमेश्वर का देना तो था पर कभी दे नहीं सकते थे। अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने हमारे पाप का सारा कर्ज चुका दिया।

पूरी तरह से क्षमा करने की परमेश्वर की इच्छा। कई आयतें हमें पूरी तरह से ईश्वरीय क्षमा को समझने में सहायक हैं (भजन संहिता 103:12; 130:7; रोमियों 4:7, 8; इब्रानियों 8:12; 10:17)। परमेश्वर सचमुच में न तो भूलता है और न भूल सकता है, परन्तु वे स्वेच्छा से पश्चात्तापी पापी को पाप के उच्च दण्ड से मुक्त कर देता है।

हमारे दूसरों को क्षमा करने पर क्षमा करने की परमेश्वर की इच्छा। परमेश्वर का हमें क्षमा देना हमारे दूसरों को क्षमा देने पर निर्भर है (5:7; 6:14, 15; 18:21, 22; लूका 17:3, 4)। पौलुस ने कहा कि हमें क्षमा करना चाहिए, क्योंकि हमें क्षमा किया गया है (इफिसियों 4:32)। क्षमा दूसरों को देने के लिए हमें दिया गया परमेश्वर का दान है।

हमें यह सोचना बन्द करना होगा कि हमने अपराध करने वाले व्यक्ति को तब तक क्षमा नहीं किया है जब तक हम अपने साथ की गई बुराई को पूरी तरह से ''भूले'' नहीं हैं। क्षमा करने का अर्थ कर्ज माफ कर देना है। किसी को अपराध से किसी को छोड़ने पर हम दण्ड देने या बदला लेने की कोशिश करने से इनकार करते हैं (रोमियों 12:17, 21)। यदि बदला लेने के विचार हमारे मन में आ जाएं, जैसा कि कई बार आ जाते हैं, तो हम उन्हें अपने विवेक में से बाहर धकेल सकते हैं। क्षमा की आशीष यह है कि हम की गई बुराई को याद करके बदला लेने से बचते हैं।

क्रूस पर यीशु ने प्रार्थना की थी, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर ...'' (लूका 23:34)। उस प्रार्थना का उत्तर पिन्तेकुस्त के दिन दिया गया था, जब सुसमाचार का संदेश सुनकर कइयों ने मन फिराया

था और उन्हें उनके पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा दिया गया था (प्रेरितों 2:23, 36-41)।

क्या आपको क्षमा मिली है? क्या आप क्षमा करते हैं?

''मुझे क्षमा कर'' (18:21-35)

हमारे प्रभु द्वारा बताए गए महानतम सबकों में से कुछ अध्याय 18 में हैं। उस ने क्षमा के बारे में बताया कि यह क्या है और क्या करती है।

क्षमा हमारी अपनी मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक सेहत के लिए आवश्यक छुटकारे का काम है। क्षमा का न होना बहुत से मसीही लोगों में पाया जाने वाला पाप है। यह कहना ही काफ़ी नहीं है कि ''मैं तुझे क्षमा करता हूं''; न हमारा अपराध करने वाले व्यक्ति के साथ मेल जोल रखना ही काफ़ी है। सचमुच में क्षमा का अर्थ है मिलने वाले घाव को मिलाप में बदल देना। ऐसा न करने से घाव खुला रह जाता है जो ठीक नहीं हो सकता।

क्षमा परमेश्वर के अनुग्रह की सबसे जबर्दस्त गवाह है। जब हम दूसरों को क्षमा करते हैं, तो यह संसार को बताती है कि परमेश्वर आज भी जीवित है और काम करता है। यह दूसरों द्वारा हम से की गई बुराइयों और हमारी नाराजगी की भावनाओं के लिए जबर्दस्त दवाई है। कुछ लोगों के लिए मन में द्वेष को बढ़ाते रहना एक गम्भीर आत्मिक समस्या है। यह दूसरों के साथ सुसमाचार को बांटने के इरादे को कमज़ोर कर सकती है। यह प्रभावशाली सेवकाई में रुकावट है। हम दूसरों को अपने जीवनों से निकालने के बजाय उन्हें क्षमा करें।

क्षमा अपने जीवन की स्वयं की चंगाई और पूर्णता के लिए एक आवश्यक अनुभव है। क्षमा केवल निष्क्रिय समर्पण नहीं है। उस व्यवहार में जो यह कहता है कि ''मैं इससे बढ़कर कुछ नहीं कर सकता'' कोई चंगाई नहीं है। क्षमा हमें निर्बलता से सामर्थ, अपर्याप्त से पक्के इरादे तक जाने देती है।

क्षमा एक सृजनात्मक बल है जो अंधकार भरे संसार को रोशन करती है। क्या ऐसा कोई है जिसे आप क्षमा करना चाहते हैं? घमण्ड और पीड़ा को एक ओर रखकर जो सही है वह करें।

क्या आपने परमेश्वर की क्षमा को मान लिया है?

पूर्ण क्षमा (18:23-35)

यह दृष्टांत हमारी ओर परमेश्वर की क्षमा के बारे में है। सब मसीही लोग पापी हैं जिन्हें परमेश्वर की दया और अनुग्रह के द्वारा क्षमा किया गया और बचाया गया है। क्षमा परमेश्वर के मन में होती है। हम कई बार कहते हैं, ''परमेश्वर जब क्षमा करता है, तो वह भूल जाता है'' (देखें इब्रानियों 8:12; 10:17)। वास्तव में परमेश्वर पाप को भूल नहीं सकता। आखिर वह सर्वज्ञ है जो सब कुछ जानता है। इसका अर्थ यह है कि वह हमारे पापों के कारण हमारे विरुद्ध अपने उचित दावों से स्वेच्छा से हमें मुक्त कर देता है। वह कभी भी उस कर्ज को इकट्ठा नहीं करता जो उन पापों के लिए हमें देना था। वह हमें हमारी बनती मृत्यु की सजा से मुक्त कर देता है।

क्रूस का संदेश उस बहुत बड़े कर्ज की बात ही है जो हमने परमेश्वर का देना है। यह वह कर्ज है जिसे हम कभी चुका नहीं सकते। परमेश्वर ने प्रताड़ना के औजार क्रूस को आशीष की

बात बना दिया। परमेश्वर जब क्षमा करता है, तो वह पूरी तरह से क्षमा कर देता है। मसीही लोगों से दूसरों को उस की क्षमा दिखाने के लिए परमेश्वर का अनुकरण करने को कहा जाता है।

टिप्पणियां

[1]यह मुख्य प्वाइंट विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 2, 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 190-92 में दिए गए गुणों से लिए गए हैं। [2]देखें मत्ती 5:1; 13:10, 36; 14:15; 15:12, 23; 17:19; 24:1, 3; 26:17. [3]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 447. [4]परन्तु नये नियम में कई बार आत्मिक अपरिपक्वता को दिखाने के लिए बचपन का इस्तेमाल नकारात्मक अर्थ में किया गया है (11:16, 17; 1 कुरिन्थियों 13:11; 14:20; इफिसियों 4:14; इब्रानियों 5:13, 14)। [5]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एण्ड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 156. [6]लियोन मौरिस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 461. [7]देखें मत्ती 5:29, 30; 11:6; 13:21, 57; 15:12; 16:23; 17:27; 18:6, 8, 9; 24:10; 26:31, 33. [8]*1 क्लेमेंट* 46.8. [9]जोसेफस ने लिखा है कि गलीलियों ने हेरोदेस के दल से लेकर उन्हें झील में डुबोकर विद्रोह किया। (जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 14.15.10.) सुटोनियस ने कहा है कि अगस्तुस ने कुछ लोगों को उनके दलों में भार बांधकर नदी में डुबो दिया था। (सुटोनियुस *लाइवज़ ऑफ द सीज़र्स: अगस्तुस* 2.67.) [10]फोटो के साथ, और जानकारी के लिए देखें, द *इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:355-56 में कार्ल जी. रसमुसेन, ''मिल; मिलस्टोन।''

[11]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 56. इब्रानी भाषा में दिए गए वचन में सब जगह राजा का ''चेहरा'' दिया गया है। [12]मौरिस, 465. [13]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (स्टुटगार्ट: जर्मन बाइबल सोसाइटी, 1994), 36. [14]मिशनाह *पिह* 4.2; जरूसलेम टालमुड *शब्बथ* 14.3. [15]कीनर, 452. [16]लुईस, 57. [17]मैजगर, 36. [18]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन आफ़ द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 697-98. [19]एच. एल. मनसेल, द *बाइबल कमैंट्री,* अंक 7, *मैथ्यू टू लूक* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1981), 95. [20]मत्ती में पहले मिलाप आरम्भ करने की जिम्मेदारी अपराध करने वाले पर डाली गई है (5:23, 24 पर टिप्पणियां देखें)।

[21]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 275. [22]*कम्युनिटी रूल* 5.24-6.1; *डैमस्कस रूल* 9.2-4. [23]मिशनाह *मैक्कोथ* 3.1, 2. [24]कीनर, 454. [25]जोसेफस *वार्स* 1.5.2. [26]टालमुड *बेराक्कोथ* 6ए; देखें मिशनाह *एबथ* 3.2, 3. [27]टालमुड *योमा* 86बी। [28]देखें कोय डी. रोपर, *एक्सोडस,* ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमैंट्री (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2008), 612. [29]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14-28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 538. [30]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 17.11.4. जोसेफस ने एक आरम्भिक काल में फलस्तीन के लिए आठ हज़ार तोड़ों की बोली लगाने वाले कर किसानों की बात की है (12.4.4 भी देखें)।

[31]एडोल्फ डीसमन, *लाइट फ्राम द एंसिएंट ईस्ट,* संशो. संस्क., अनु. लायनल आर. एम. स्ट्रेचन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1978), 331. [32]लाइवी 26.34.3. [33]मौरिस, 475. [34]इसी प्रकार, मिशनाह में बाजार में किसी कर्जदार को गले से पकड़ने की बात है। (मिशनाह *बाबा बथरा* 10.8.) [35]लुईस, 62. [36]टोबिट 5:21, 22; 12:11-22; *1 एनोक* 100.5; *जुबलीस* 35.17; *टैस्टामेंट ऑफ़ लेवी* 5.6; *टैस्टामेंट ऑफ़ जेकब* 2.5, 6; *सूडो-फिलो* 11.12; 15:5; 59.4; *जेनेसिस रब्बाह* 44.3; 60.15; *सौंग रब्बाह* 3.6.3. [37]देखें ओरिगन *होमिलीस ऑन लूक* 12.

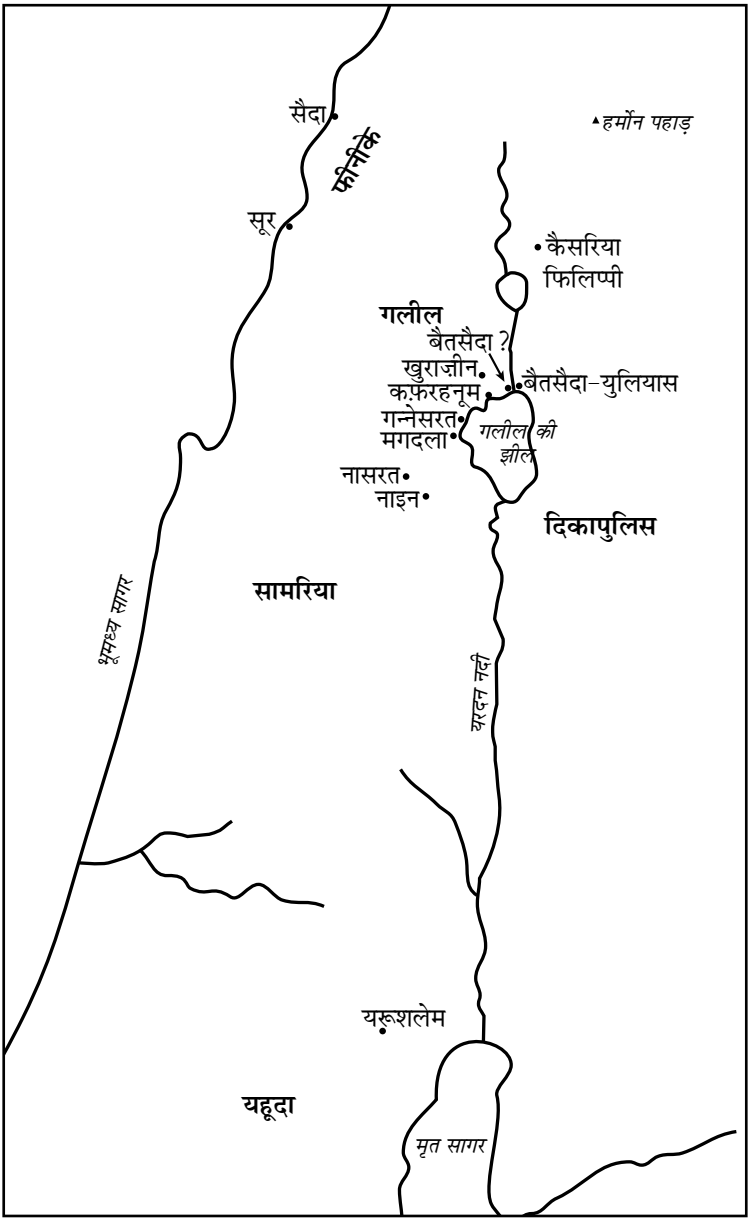

यीशु के समय में फलस्तीन का एक मानचित्र
गलील की झील के निकट के नगरों को दिखाता हुआ